International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-05-2025, Accepted: 14-06-2025, Published: 30-06-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 143-144

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य आधारित शिक्षा

राजदीप चतुर्वेदी
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को सही मूल्यों एवं दृष्टिकोण के साथ सामाजिक एवं बाहरी दुनियां में सामना करने के लिये तैयार करना जिसमें बच्च्चों के शारीरिक विकास के साथ–2 मानसिक विकास एवं नैतिक विकास भी शामिल है जैसा कि स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ बौद्धिक विकास नहीं बल्कि नैतिक एवं सामाजिक विकास भी होना जरूरी है वहीं यूनिसेफ बालिकाओं की शिक्षा का समर्थन भी करता है वहीं भारतीय पुर्नजागरण के निर्माता राजा राममोहन राय की प्रेरणा से 1822–23 में हिन्दू कालेज की स्थापना की गई वहीं पाश्चात्य महान विद्वान प्लेटो ने शिक्षा को तीन चरणों में बांट दिया प्राथमिक शिक्षा 10 वर्ष से 20 वर्ष तक जिससे संगीत व व्यायाम शिक्षा की विषय वस्तु बताई तथा 20 से 30 वर्ष के बीच गणित, ज्योतिष तथा ज्यामितीय की शिक्षा का प्रावधान किया तीसरा चरण जिसमे 30 से 35 वर्ष दर्शन शास्त्र की शिक्षा दी जायेगी

मूलशब्दः डा० राधा कृष्णन, छात्र, विकास, प्लेटो, गाँधी जी, यूनीसेफ, मूल्य

सामान्य परिचय

मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य एवं प्रभाव के सम्बन्ध में कोठारी आयोग 1964 एवं नई शिक्षा नीति 1986 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में कुछ शैक्षिक नवाचारों का उल्लेख किया है जैसे मूल्य शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा जनसंख्या शिक्षा अभिभावक शिक्षा सतत् शिक्षा, प्रसार शिक्षा आदि का उल्लेख किया गया है जिसमे मूल्य शिक्षा– वर्तमान समाज पाश्चात्य संस्कृति एवं भौतिक वादी दृष्टिकोण की अन्धाधुंध की दौड़ में लगा हुआ है जिससे सास्कृतिक एवं नैतिक पतन हो रहा है भारतीय मानव अपने सुसंस्कृत एवं स्वस्थ्य मूल्यों को त्यागकर पतित मूल्यों की तरफ देख रहा है जिससे मूल्यों का क्षरण हा रहा है अतः मूल्यों की पुनः स्थापना कि लिये समाज में मूल्यों की शिक्षा को नवाचार के रूप में शामिल किया जाय चूकि नवाचार एवं परिवर्तन दोनो शिक्षा पर प्रभाव डालते हैं। प्लेटो ने कहा है कि मानसिक व्याधि का मानसिक उपचार शिक्षा है

भारतीय संविधान में भी शिक्षा के मूल्य ढाचें को व्यस्थित किया गया है इसलिये अनु0 45 में मूल्य शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जो कहता है कि राज्य को सभी बच्चों के लिये तब तक शुरूआती देखभाल और शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करना होगा जब तक की छः वर्ष तक की आयु प्राप्त नहीं कर लेते है जिसे 86 वें संसोधन 2002 द्वारा अन्तः स्थापित किया गया तथा अनु० 21 (क) में शिक्षा के अधिकार को जोडा गया जिसमें 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क प्रथमिक शिक्षा दी जायेगी।

नई शिक्षा नीति 2020

नई शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर विशेष जोर देती है यह इस सिद्धान्त आधारित है कि शिक्षा से न केवल संज्ञानात्मक क्षमतायें विकसित होना चाहियें भारतीय शिक्षा प्रणाली ने चरक सुश्रुत आर्यभट्ट, बराहमिहिर भास्कराचार्य, ब्रहमगुप्त नार्गाजुन गौतम, पतंजली आदि जैसे महान विद्वानों को जन्म दिया है जिन्होनें गणित खगोल विज्ञान धातु चिकित्सा, शल्य चिकित्सा आदि में योगदान दिया नई शिक्षा नीति को सभी छात्रों को चाहें वे कहीं भी रहते हो एक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रणाली प्रदान कराना चाहिये।

नई शिक्षा नीति के उद्देश्य

इसका उद्देश्य अच्छे मनुष्यों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो जिनमे करूणा और सहानुभूति साहस और लचीलापन वैज्ञानिक स्वभाव और रचनात्मक कल्पना ठोस नैतिक आधार और मूल्यों के साथ ।

1. प्रत्येक छात्र की अनूठी क्षमतायों को पहचानना और बढावा देना।
2. सीखने के बजाय वैचारिक समझ पर जोर (रटने और परीक्षा के लिये) ।
3. सहानुभूति ।
4. शिक्षण और सीखने में बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति को बढावा देना ।
5. हल्का एवं सख्त नियामक ढांचा ।

नोट

प्रो० सी० वी० गुड "मूल्य शिक्षा उन सभी प्रक्रयाओं का समुच्चय है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति उस समाज में सकारात्मक मूल्यों की क्षमतायों दृष्टिकोणों और व्यवहार के अन्य रूपों को विकसित करता है जिसमें वह रहता है"।

उपरोक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त महत्वपूर्ण विद्वानों द्वारा दिया गया योगदान

प्लेटों अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से उजाला ही शिक्षा का उद्देश्य है।

विवेकानन्द स्वामी जी ने सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन का आव्हन किया है क्योंकि सभी व्यक्तियों को शिक्षा का अवसर मिलना चाहिये चूंकि शिक्षा के अभाव में भारत की स्थिति दयनीय हुई तथा वे गुरूकुल शिक्षा पद्धिति के समर्थक थे उनका मूल लक्ष्य विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति का निर्माण करना था।

दयानन्द सरस्वती

शिक्षा को मानव जीवन का महत्वपूर्ण ध्येय माना उन्होनें कहां संसार में जितने दान है उन सब में विद्या दान श्रेष्ठ है उनके शिक्षा उम्बन्धी विचार वैदिक परम्परा के पोषक है।

डगलस व हालैण्ड शिक्षा शब्द का प्रयोग उन सब परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिये किया जाता है जो एक व्यक्ति में उसके जीवन काल में होते है।

डा० राधा कृष्णन: शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करनो चाहिये इस कार्य को किये बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।

फ्रेंडसनः आधुनिक शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति और समाज दोनो से है।

गाँधी: शिक्षा से मेरा अभप्राय बालक व मनुष्य के शरीर मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्ति है ।

नोट

शिक्षा को तीसरा नेत्र कहा गया है श्ज्ञानं मनुजस्य तृतीय नेत्रष्

मूल्य शिक्षा के सिद्धान्त –

- सहानुभूति
- समानता
- सभी का सम्मान
- स्वास्थ्य की देखभाल
- गहन सोच
- मूल्य आधारित शिक्षा प्रकार

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

1. बच्चों के व्यक्तित्व का शारीरिक मानसिक भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं का पूर्ण विकास ।
2. अच्छे शिष्टाचार और जिम्मेदार और सहयोगी नागरिकता का विकास ।
3. व्यक्ति और समाज की गरिमा के प्रति सम्मान विकसित करना ।
4. देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास ।
5. धार्मिक और विश्वास के प्रति समझ विकसित
6. विभिन्न धार्मिक विश्वासों के प्रति सहिष्णुता और समझ विकसित करना।
7. अंतर राष्ट्रीय स्तर पर भाई चारे की भावना
8. विद्यार्थियों को नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाना।
9. मूल्य शिक्षा पर मूल्यांकन मानदंड विकसित करना।
10. मूल्य शिक्षा का बेहतर उपाय विकसित करना ।

मूल्य आधारित शिक्षा के प्रभाव

मूल्य आधारित शिक्षा के कई प्रभाव है जिनमें निम्न लिखित प्रकार हैं

1. नैतिक विकास मूल्य आधारित शिक्षा से विद्यार्थियों में सही एवं गलत की समझ विकसित होती है इसमें ईमानदारी निष्ठा और सहानुभूति जैसे गुणों का विकास होता है।
2. विकास मूल्य आधारित शिक्षा से छात्रों का समग्र विकास होता है जिसमें चरित्र विकास, व्यक्तित्व विकास, नागरिकता विकास और आध्यामिक विकास शामिल सामिल है।
3. समाज के लिये फायदेमंद छात्रों में समाज के लिये जिम्मेदार और उत्पादक बनने का भाव विकसित होता है।
4. 4.. भविष्य के लिये तैयार मूल्य आधारित शिक्षा से छात्रों को सही दृष्टिकोण और मूल्यों के साथ समाज की समस्याओं का समाधान करनो में सक्षमता बढ़ती है ।
5. नैतिक मूल्यों का निर्माण एवं समझ मूल्य आधारित शिक्षा से विधार्थियों में नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है साथ–2 भविष्य के लिये रोडमैप भी तैयार हो जाता है।

मूल्य शिक्षा का महत्व

मूल्य शिक्षा बच्चों के सम्पूर्ण विकास में योगदान देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है हमारे बच्चों में मूल्यों को परिवर्तित किए बिना हम उन्हें अच्छी नैतिकता के बारे में नहीं सिखा पायेंगें क्या सही है क्या गलत है साथ ही दयालुता, सहानुभूति और करूणा जैसे प्रमुख लक्षण भी मूल्य शिक्षा के महत्व में शामिल है प्रौद्योगिकी की उपस्थिति और इसके हानिकारक उपयोग के कारण इक्कीसवीं सदी में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता और महत्व कहीं अधिक महत्वपूर्ण है बच्चों को आवश्यक मानवीय मूल्यों को पढाने से और उन्हें नैतिक व्यवहार और करूणा को समझने में मदद कर सकते है मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है और उन्हे एक अच्छा इन्सान बनने के लिये

प्रेरित करती है उन लोगों की मदद करती है उनमे समुदाय का सम्मान करने के साथ–2 जिम्मेदार नागरिक व समझदार बनाती है ।

नोट

मूल्य शिक्षा के माध्यम से हम बच्चों में मजबूत चरित्र एवं मूल्यों को विकसित कर सकते हैं इसलिये स्कूल एवं अन्य शिक्षण संस्थान मूल्य आधारित शिक्षा को महत्व दे रहे है अपने पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बना रहे हैं।

निष्कर्ष

चूंकि चिष्कर्षता कहा जा सकता है कि मूल्य आधारित शिक्षा विद्याथियों के शारीरिक विकास के साथ–2 मानसिक एवं नैतिक और सामाजिक विकास पर भी जोर देती है जिससे विद्याथियो के जीवन में आने वाली उन तमाम समस्याओं का निराकरण वे स्यंम ढूढने में सक्षम हो सके यह शिक्षा का एक ऐसा तरीका है जिससे बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिलती है तथा नैतिक बुद्धिमता का विकास होता है और बच्चों में आत्म नेतृत्व की भावना आती है साथ–2 दयालुता एवं जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होते है ।

सन्दर्भ सूची

1. नई शिक्षा नीति 2020 (मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार) पृष्ठ सं०, 1,3,4,5
2. यूनीवसिर्टी – शिक्षा शास्त्र बी०ए० तृतीय कानपुर पब्लिशिंग होम पाण्डेनगर पृष्ठ सं0 16,17,18,20,24
3. राजनीति विज्ञान समग्र अध्ययन राजेश मिश्रा (ओरियन्ट ब्लैक स्वान पब्लिकेशन हैदराबाद) 2021 पृष्ठ सं० –84
4. राज०वि० बी०ए० द्वितीय वर्ष बी०एल०फडिया (साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा)– 2012 पृष्ठ सं0–100
5. आधुनिक भारतीय राज० चिन्तक बी०एल०फडिया–(साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा)– 2013 पृष्ठ सं0–45
6. शिक्षा मनोविज्ञान (विनोद पुसतक मन्दिर आगरा2) 2013 पृष्ठ सं० –5,6 ।
7. www.yourarticlelibrary.com